फिशिंग कैट कॉलरिंग परियोजना

चर्चा में क्यों?

भारतीय वन्यजीव संस्थान-देहरादून, कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य में **भारत की पहली** फिशिंग कैट कॉलरिंग परियोजना शुरू करने के लिये तैयार है।

मुख्य बिंदु

- **कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य:**
  - 235 वर्ग किलोमीटर में विस्तृत कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य (CWS) **भारत का दूसरा सबसे बड़ा** मैंग्रोव आवास **है।**
  - यह **लुप्तप्राय फिशिंग कैट का आवास है।**
  - गोदावरी नदी के मुहाने पर स्थित यह अभयारण्य **आंध्र प्रदेश के काकीनाडा में कोरिंगा नदी और** बंगाल की खाड़ी के संगम पर स्थित है।
  - कृष्णा नदी के मुहाने पर स्थित वन क्षेत्र में कृष्णा वन्यजीव अभयारण्य फिशिंग कैट का **एक अन्य निवास स्थान है।**
- **फिशिंग कैट की जनसंख्या का रुझान:**
  - **वर्ष 2018** में पहले फिशिंग कैट सर्वेक्षण में 115 व्यक्तियों की आबादी दर्ज की गई थी।
  - **पिछले पाँच वर्षों** में इनकी संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो अभयारण्य में तथा इसके आसपास जनसंख्या वृद्धि का संकेत देती है।
- **मैंग्रोव संरक्षण और सामुदायिक भूमिका:**
  - स्थानीय समुदाय, **पर्यावरण विकास समितियों (EDC) के माध्यम से,** मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र का सक्रिय रूप से संरक्षण करते हैं।
  - कुल 420 स्थानीय लोग EDC का हिस्सा हैं, जो वैकल्पिक आजीविका के लिये समुदाय-आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन (CBET) **का प्रबंधन भी करते हैं।**
- **भारत की पहली फिशिंग कैट कॉलरिंग परियोजना:**
  - भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, **दूसरी फिशिंग कैट जनगणना के भाग के रूप में भारत की पहली फिशिंग कैट कॉलरिंग परियोजना का क्रियान्वयन कर रहा है।**
  - इस तीन वर्षीय परियोजना का **उद्देश्य प्रजातियों के निवास क्षेत्र, व्यवहार, आवास पारिस्थितिकी, भोजन की आदतों और स्थान उपयोग का अध्ययन करना है।**
  - परियोजना में **10 फिशिंग कैट्स को हल्के** GIS-सुसज्जित उपकरणों से लैस करने की योजना है।
  - कॉलरिंग का कार्य मार्च या अप्रैल 2025 तक पूरा होने की आशा है।
- **रामसर कन्वेंशन स्थल प्रस्ताव:**
  - आंध्र प्रदेश वन विभाग कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य को इसकी समृद्ध जैव विविधता और पारिस्थितिक महत्त्व के कारण रामसर कन्वेंशन साइट का दर्जा दिलाने के लिये प्रयासरत है।

भारतीय वन्यजीव संस्थान

- **यह पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अंतर्गत** एक स्वायत्त संस्था है।
- इसकी **स्थापना वर्ष 1982 में हुई थी।**
- **इसका मुख्यालय देहरादून, उत्तराखंड** में है।
- यह वन्यजीव अनुसंधान और प्रबंधन में प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षणिक पाठ्यक्रम और परामर्श प्रदान करता है

फिशिंग कैट

//

- **वैज्ञानिक नाम:** (Prionailurus viverrinus)
- **विवरण:**
    - इसका आकार घरेलू बिल्ली से दोगुना है।
    - फिशिंग कैट **रात्रिचर (रात में सक्रिय) होती है** और मछली के अलावा **मेंढक, क्रस्टेशियन, साँप, पक्षियों का भी शिकार करती है तथा बड़े पशुओं के शवों को भी खाती है।**
    - यह प्रजाति **पूरे वर्ष प्रजनन करती है।**
    - वे अपना अधिकांश जीवन जलाशयों के निकट घनी वनस्पतियों वाले क्षेत्रों में व्यतीत करते हैं और उत्कृष्ट तैराक होते हैं।
- **प्राकृतिक वास:**
    - **फिशिंग कैट पूर्वी घाट** के किनारे बिखरे हुए स्थानों पर पाई जाती हैं। वे मुहाना के बाढ़ के मैदानों, ज्वारीय **मैंग्रोव वनों** और अंतर्देशीय स्वच्छ जल के आवासों में भी बहुतायत में पाई जाती हैं।
    - पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में सुंदरबन के अलावा, फिशिंग कैट्स ओडिशा में **चिलिका लैगून** और आसपास की **आर्द्रभूमि तथा आंध्र प्रदेश में कोरिंगा और कृष्णा मैंग्रोव में निवास करती हैं।**
- **परिसंकटमय:**
    - फिशिंग कैट के लिये एक बड़ा खतरा उनके पसंदीदा निवास स्थान, **आर्द्रभूमि का विनाश है।**
    - **झींगा पालन,** फिशिंग कैट के **मैंग्रोव आवासों** के लिये एक और बढ़ता हुआ खतरा है।
    - इस **अनोखी बिल्ली को मांस और त्वचा के लिये शिकार** का भी खतरा रहता है।
    - जनजातीय शिकारी पूरे वर्ष **अनुष्ठानिक शिकार प्रथाओं में लिप्त रहते हैं।**
    - **कभी-कभी इसकी खाल** के लिये भी इसका अवैध शिकार किया जाता है।
- **संरक्षण स्थिति:**
- **IUCN रेड लिस्ट:** असुरक्षित
- **CITES:** परिशिष्ट II
- **भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** अनुसूची I

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/fishing-cat-collaring-project